लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 3, संख्या: 4; जनवरी-जून, 2022

गोवालपरीया लोकगीतों में समाज जीवन का चित्रण

✍ हिमाश्री डेका

साहित्य समाज जीवन का आइना है। मौखिक और लिखित दोनों साहित्य के जरिए समाज जीवन का नान्दनिक रूप अभिव्यक्त होता है । इसीलिए किसी एक जाति के किसी एक समय के मौखिक अथवा लिखित साहित्य अध्ययन करने से उस जाति के उस समय के समाज जीवन के विभिन्न रूपों का सम्यक आभास मिलता है ।

गोवालपरीया लोकगीतों के प्रसंग और प्रकरण गोवालपारा के समाज जीवन, मिट्टी और लोगों से संपूर्ण रूप से जुड़े हुए हैं ।

भारतीय आदर्श में स्वामी के बिना नारी का जीवन अर्थहीन है । नारी के जीवन-यौवन, रूप-सौन्दर्य, सजना-सवाँरना आदि स्वामी के बिना कुछ काम के नहीं। गोवालपरीया लोकगीतों में इसका प्रतिफलन विभिन्न रूपों में हुआ है :

"प्रतिधन प्राण बाचेना ज्वालाय मरि ।
खोपते नाइ रे कइतर
कि करे सेइ खोपे ।
आर जेना नारीर सोवामी नाइ,
कि करे तार रूपे ।।"

असमीया तथा गोवलपरीया लोक परम्परा में स्त्री हमेशा पति के दु:ख में दु:खी और पति के सुख में सुखी रहती है । स्त्री कभी भी स्वामी के दु:ख यंत्रणा का सहन नहीं कर सकती । गोवालपरीया लोकगीत में इसका आभास देखने को मिलता है :

"पति मोर हाल जुरिव गेइछे,
पति मोर हाल बबार गेइछे
दुपुरी रैदत हाल बुवाय पति
गाउ ज्वाला करे मोरे ।। "

असमीया तथा गोवालपरीया समाज में सती नारी हमेशा अपने पति के लिए गौरव करती है जबकि असती नारी अपने पिता के घर को लेकर ही गौरव करती है । गोवालपरीया लोकगीतों में भी इसका चित्रण हुआ है :

"आर सती गैरव करे
निजेर पतिक निया ।
आर असती नारी गैरव करे
बापेर बारी नियारे ।।"

गोवालपरीया लोकसमाज में दैववादी प्रभाव देखने को मिलता है । भारतीय तथा असमीया लोग अपने सुख-दु:खों का कारण देवी-देवताओं को मानते हैं । गोवालपरीया लोकगीतों में ऐसे ही विश्वास का प्रतिफलन लक्षित होता है :

"पत्तिरा करियारे हस्तीर
बारेया दिलं पाउ ।
माथार ऊपर काल जिठीउ
सखी करे पंच राउ ।"

गोवालपरीया लोकगीतों में स्त्री मन का सुन्दर चित्रण प्रतिफलित हुआ है । धन के बल पर ज्यादा उम्र के व्यक्ति कभी अपने से काफी कम उम्र की लड़की से विवाह करता है तो कभी धन प्राप्ति के लोभ से पिता ही अपनी बेटी का विवाह ऐसे लोगों से कराता है । गोवालपरीया लोकगीतों में इसका भी वर्णन मिलता है :

"आश परशी बेचेया खाइछे आषे-पाषे ।
मोर बाप बेचेया खाइछे देश-विदेशेरे ।।"

धन के कारण अपनी बेटी को पागल के साथ भी ब्याहा जाता है, जिसका चित्रण इस गीत के जरिए देखा जा सकता है :

"उरे बाप-मावे बेचेया खाइछे ,
सोवमी पागला रे।।"

यात्रा-प्रसंग के साथ विभिन्न विश्वास असमीया तथा गोवालपरीया समाज में प्रचलित है । यात्राकाल में चिपकली की आवाज अशुभ मानी जाती है । इस विश्वास का प्रतिफलन भी इन गीतों मे देखा जाता है :

"पात्तिरा करियारे हस्तीर
बारेया दिलं पाउ ।
माथार ऊपर काल जिठीउ
सखी करे पंच राउ ।।"

प्राचीन काल से ही तंत्र-मंत्रों ने असम के लोकसमाज में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। तंत्र -मंत्र के जरिए घर को बाँधना, दरवाजे को बाँधना जैसी रीतियाँ भी असम के लोकसमाज में प्रचलित हैं । गोवालपरीया समाज में वशीकरण मंत्र के प्रचलन का आभास इस लोकगीत से मिलता है :

"तखने ना कईछं मइषाल
नायान गोवालपारा ;
गोवालपारार चेंरीगुला
जाने धूला झारा ।"

गोवालपरीया लोक समाज में व्यापार से जीवन निर्वाह करने की प्रथा प्राचीन है । गोवालपारा के व्यापारी नाँव से विभिन्न देशों में व्यापार हेतु जाने का वर्णन लोकगीतों में देखने को मिलता है :

"गदाधरेर उजानते
देवाधर्मार पाटेर काछे ।
बन्धु गेइछे बणिज करिबारे ।।"

गोवालपारा समाज में बहुत पहले से ही पूजा से संबंधित विभिन्न उत्सव मनाये जाते हैं। ऐसे उत्सवों के जरिए गोवालपारा

लोकसमाज में धार्मिक चेतना का आभास मिलता है। पूजा विषयक विभिन्न गीत गोवालपरीया लोकगीतों में देखे जाते हैं । ऐसे गीत हैं- काति पूजा के गीत, त्रिनाथ पूजा के गीत, जगन्नाथ पूजा के गीत, चड़क पूजा के गीत आदि । इन गीतों में वर्णित विषयों के माध्यम से गोवालपारा में प्रचलित विविध रीति-नीति, धार्मिक विश्वास और भक्ति का निदर्शन मिलता है ।

इसी तरह गोवालपरीया लोकगीत में गोवालपारा तथा असम के समाज जीवन की झाँकी पूर्ण रूप से दिखाई देती है ।

संदर्भ ग्रंथ-सूची :

1.भट्टाचार्य, वसन्त कुमार, असमीया लोकगीत समीक्षा, चंद प्रकाश, पाणबाजार, गुवाहाटी

2. दास, भवेश, गोवालपरीया लोक-संस्कृतित एभूमूकि,वीणा लाइब्रेरी,कॉलेज हॉस्टल रोड, गुवाहाटी, असम

संपर्क-सूत्र:

ई-मेइल : himashree.hd@gmail.com